एस०एस० कॉलेज जहानाबाद

हिन्दी विभाग

स्नातक प्रतिष्ठा, भाग - 1

विषय :- 'चन्द्रगुप्त' नाटक

शिक्षण - पारस० एम

समय - 11 बजे से 12 बजे तक, 16.07.2020

शिक्षक - डॉ. रेखा शर्मा

पाठ - संवाद या कथोपकथन

प्रिय छात्र-छात्राओं !

संवाद नाटक का शरीर होता है। इसी के माध्यम से नाटक के समस्त कार्य-व्यापार घटित होते हैं। संवाद के तीन रूप हैं- सर्वश्राव्य नियत श्राव्य और अश्राव्य।

सर्वश्राव्य - वैसा संवाद जो सभी के सुनने योग्य हो, इसमें रंगमंच पर बैठे कलाकार भी शामिल होते हैं, दर्शक दीर्घा में बैठे दर्शकों के लिए तो है ही।

नियत श्राव्य - नियत श्राव्य से तात्पर्य वैसे संवाद से है जो कुछ ही लोगों के लिए होता है, शेष के लिए नहीं।

अश्राव्य - यह संवाद गुप्त रूप से उच्चरित होता है जिसे किसी को सुनाई नहीं पड़े तथा उस संवाद के भाव स्पष्ट हो जाते हैं। इसी में स्वगत कथन भी आता है पर व्यावहारिक दृष्टिकोण से इसे सभी सुनते तो हैं पर संवाद रंगमंच पर किसी से नहीं होता।

प्रस्तुत नाटक के स्वगत कथन पर टिप्पणी करते हुए डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है- "प्रसाद ने स्वगत का विधान सामान्यतः दृश्यों के आरम्भ और अन्त में किया है। कभी-कभी उसे दृश्यों के बीच में भी विन्यस्त कर लिया गया है। .... दृश्य के बीच में आये हुए स्वगत कथावस्तु के अनिवार्य अंग नहीं बन पाते। 'चन्द्रगुप्त' के प्रथम अंक में सिंहरण का यह स्वगत - 'एक अग्निमय गंधक का स्रोत ....

पूर्णिमा/जयंती 7 मई 1 दिन | 36. क्रिसमस अवकाश
नोट : 1. 1 जून से 30 जून तक ग्रीष्मावकाश (केवल शिक्षकों के लिए)
2. रविवार सार्वजनिक अवकाश है।
3. चाँद के दृष्टिगोचर होने के अनुसार मुस्लिम-त्योहारों ...

........मयूर से नाचेंगे' ऐसा लगता है, मानो सिंहरण चन्द्रगुप्त और चाणक्य को संकेत करता है कि आप-लोग जरा मंच से बाहर चले जाइए, मुझे स्वगत बोलना है।" (हिन्दी नाटक, पृष्ठ 74-75)

वास्तव में कथोपकथन के ताने-बाने से ही नाटक का कथानक बुना जाता है। कथानक को विशृंखल अथवा सुशृंखल, गतिशील अथवा अगतिशील बनाने का बहुत कुछ श्रेय कथोपकथन को ही है। क्रिया-व्यापार और चरित्र की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विशेषताओं को कथोपकथन के द्वारा ही उद्घाटित किया जाता है। उपर्युक्त दोनों विशेषताएं चन्द्रगुप्त नाटक में एक सीमा तक ही दिखाई देती है। वैसे कुछ स्थलों को छोड़कर नाटक के संवाद वस्तु-संविधान में सामान्य रूप से सहायक हैं। उनका उपयोग वस्तु-विधान में यों दिखाई पड़ता है कि उन्हीं के सहारे वस्तु गति पाती बढ़ी है। यह खूबी होनी चाहिए संवाद में कि मूल विषय का प्रवाह भी नहीं टूटने पावे और एक बात से दूसरी और दूसरी से तीसरी स्वयमेव फूटती चली जावे। प्रस्तुत नाटक के प्रारम्भ में ही चाणक्य की उक्ति इस संबंध में देखी जा सकती है — 'चाणक्य — केवल तुम्हीं लोगों को अर्थशास्त्र पढ़ाने के लिए ठहरा था'। सिंहरण — 'आर्य! मालवों को अर्थशास्त्र की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी अस्त्रशास्त्र की'। चाणक्य — 'अच्छा, तुम अब मालव में जाकर क्या करोगे'। सिंहरण — 'अभी तो मैं मालव नहीं जाता। मुझे तो तक्षशिला की राजनीति पर दृष्टि रखने की आज्ञा मिली है'। यहाँ अर्थशास्त्र से लेकर तक्षशिला की राजनीति पर दृष्टि रखने तक बात बढ़ती चली आती है। इसी प्रकार आगे चलकर विस्फोट दृष्टि रखने की बात लेकर चन्द्रगुप्त और आम्भीक के तलवार खींच लेने तक की बात बढ़ी चली आती है। प्रायः संवाद छोटे हैं पर स्वगत कथन काफी लम्बे हो गये हैं। प्रसाद नाटककार की दार्शनिकता ही स्वगत कथनों में उभर आती है।

शेष अगली कक्षा में।

16.7.20